International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(II), January - March, 2023, pp. 42-44

माध्यमिक स्तर की शिक्षण संस्थाओं में आईसीटी सुविधाओं की उपलब्धता का अध्ययन

डॉ. पूनम श्रीवास्तव*

सार

आज आईसीटी (सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी) को दुनियां के ईधन के रूप में माना जा रहा है। इसने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। अधिकांश देश आईसीटी को शिक्षा में परिवर्तन और नवाचार के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में देखते है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के युग में शिक्षा के क्षेत्र में आईसीटी की उपेक्षा नहीं कर सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के समक्ष यह विचारणीय प्रश्न था कि वह क्या हो सकता है जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों व नागरिकों के बीच समझ, सहयोग व समन्वय को स्थापित कर सकें। इसके उत्तर में अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा की बात कही गई। वह शिक्षा जो विश्व के सभी देशों द्वारा समान रूप से महत्वपूर्ण मानते हुए अपनाई जाए इसी अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता ने आईसीटी की अवधारणा को जन्म दिया, जिसने शिक्षा को ऊँचे आयामों तक पहूँचा कर उसे सबके लिए सरल व सुगम बना दिया।

शब्दकोशः *आईसीटी, अन्तर्राष्ट्रीय संस्था, संयुक्त राष्ट्र संघ, प्रौद्योगिकी।*

प्रस्तावना

सूचना व संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी), सूचना प्रौद्योगिकी और संचार प्रौद्योगिकी के संयोजन के रूप में प्रकट हुई और वर्तमान में इसमें विभिन्न प्रकार की कम्प्यूटर और इन्टरनेट प्रौद्योगिकियां और संबंधित सॉफ्टवेयर और अनुप्रयोग शामिल है। सूचना प्रौद्योगिकी में दो शब्द शामिल है 'सूचना और प्रौद्योगिकी' शब्द 'सूचना' किसी भी संचार या ज्ञान के प्रतिनिधित्व जैसे राय, डेटा, और जानकारी से संबंधित है। 'प्रौद्योगिकी' को वैज्ञानिक ज्ञान का व्यवहारिक रूप और व्यावहारिकता में अनुप्रयोग का विज्ञान माना जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी कोई भी उपकरण या इन्टरकनेक्टेड सिस्टम या उपकरणों की उपप्रणाली है जिसका उपयोग डेटा या सूचना के अधिग्रहण, भण्डारण, प्रबंधन, प्रसारण या प्राप्ति में किया जाता है।

अध्ययन का औचित्य

आईसीटी अब शिक्षा का एक अविभाज्य अंग बन गया है। छात्र, शिक्षक व विद्यालय सभी को समय की मांग के अनुसार अपने आपको बदलना होगा और इस बदलते परिवेश में शिक्षण संस्थाओं को भी इस बदलाव के लिए अपने आपको तैयार करना होगा। आज आईसीटी का प्रयोग महानगरों, विद्यालयों व विश्वविद्यालयों के आम जनजीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। पढ़ाई अब कक्षा–कक्ष तक ही सीमित नहीं है बल्कि वह पूरे विश्व से जुड़ चुकी

* असिस्टेंट प्रोफेसर, एस.एस.जी. पारीक पी.जी. कॉलेज ऑफ एजूकेशन, जयपुर, राजस्थान।

है। आज के युग में विद्यार्थी को विषयगत सारी जानकारी जल्दी और आसानी से आईसीटी के माध्यम से प्राप्त होती है विद्यार्थी विषय से संबंधित सभी सूचनाएं आसानी से एकत्र कर लेते हैं। जब आईसीटी प्रत्येक व्यक्ति व विद्यार्थी के लिए इतना आवश्यक है तो यह एक स्वाभाविक सी बात है कि इसकी सुविधाएं शिक्षण संस्थाओं में होनी चाहिये इसलिए एक प्रश्न शोधकर्त्री के मस्तिष्क पटल पर आया कि क्या आईसीटी का प्रयोग हमारी शिक्षण संस्थाओं में किया जा रहा है, क्या शिक्षण संस्थाओं में इसके लिए पर्याप्त सुविधाए है इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए शोधकर्त्री ने विद्यालयों में आईसीटी सुविधाओं की उपलब्धता व प्रयोग पर अन्वेषण करना चाहा जिससे शोध समस्या का प्रादुर्भाव हुआ।

समस्या का अभिकथन

माध्यमिक स्तर की शिक्षण संस्थाओं में आईसीटी सुविधाओं की उपलब्धता का अध्ययन।

समस्या अभिकथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या

- **आईसीटी :–** आईसीटी का विस्तृत रूप 'सूचना एवं संचार प्रौधोगिकी' से है जिसमें उपग्रह प्रणालियों के साथ–साथ संचार उपकरण, सैल, फोन, रेडियो, टेलिविजन और कम्प्यूटर शामिल है।
- **शिक्षण संस्थान :–** वह स्थान जहॉ औपचारिक ढंग से शिक्षा प्रदान करने का कार्य किया जाता है शिक्षण संस्थान कहलाती है।

अध्ययन के उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर की शिक्षण संस्थाओं में आईसीटी उपकरणों के प्रति शिक्षकों की क्रियात्मक क्षमताओं का अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर की शिक्षण संस्थाओं में आईसीटी उपकरणों की उपलब्धता का अध्ययन।

शोध की परिकल्पना

- माध्यमिक स्तर की शिक्षण संस्थाओं में आईसीटी उपकरणों के प्रति पुरूष और महिला शिक्षिकाओं की क्रियात्मक क्षमताओं के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- माध्यमिक स्तर की निजी व सरकारी शिक्षण संस्थाओं में आईसीटी उपकरणों की उपलब्धता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना :– 1

माध्यमिक स्तर की शिक्षण संस्थाओं में आईसीटी उपकरणों के प्रति पुरूष और महिला शिक्षिकाओं की क्रियात्मक क्षमताओं के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका 1

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी मूल्य	स्वीकृत/अस्वीकृत
पुरूष	30	134.9	16.25	4.93	0.83	स्वीकृत
महिला	20	130.8	18.29			

0.05 सार्थकता स्तर = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48

0.01 सार्थकता स्तर = 2.67

तालिका संख्या –1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर की शिक्षण संस्थाओं में आईसीटी उपकरणों के प्रयोग के प्रति पुरूष शिक्षकों के अंको का मध्यमान 134.9 एवं मानक विचलन 16.25 है तथा महिला शिक्षिकाओं के अंको का मध्यमान 130.8 एवं मानक विचलन 18.29 है तथा दोनों समूहों की मानक त्रुटि 4.93 है तथा स्वतंत्रता के अंश 48 पर ''टी'' मूल्य 0.83 प्राप्त हुआ है जो 0.05 के सार्थकता स्तर के प्रमापित ''टी'' मूल्य 2.01 से कम है अतः परिकल्पना –1 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना :–2

माध्यमिक स्तर की निजी व सरकारी शिक्षण संस्थाओं में आईसीटी उपकरणों की उपलब्धता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका 2

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी मूल्य	स्वीकृत/अस्वीकृत
सरकारी विद्यालय	25	121.44	12.02	3.47	6.08	अस्वीकृत
निजी विद्यालय	25	145.08	12.50			

0.05 सार्थकता स्तर = 2.01 स्वतंत्रता के अंश = 48

0.01 सार्थकता स्तर = 2.67

तालिका संख्या –2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर की सरकारी शिक्षण संस्थाओं में आईसीटी उपकरणों की उपलब्धता के अंको का मध्यमान 121.44 एवं मानक विचलन 12.02 है तथा माध्यमिक स्तर की निजी शिक्षण संस्थाओं में आईसीटी उपकरणों की उपलब्धता के अंको का मध्यमान 145.08 एवं मानक विचलन 12.50 है तथा दोनों समूहों की मानक त्रुटि 3.47 है तथा स्वतंत्रता के अंश 48 पर ''टी'' मूल्य 6.08 प्राप्त हुआ है जो 0.05 के सार्थकता स्तर के प्रमापित ''टी'' मूल्य 2.01 से अधिक है अतः परिकल्पना –2 अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर की शिक्षण संस्थाओं में आईसीटी उपकरणों के प्रयोग के प्रति पुरूष शिक्षकों व महिला शिक्षिकाओं के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

माध्यमिक स्तर की सरकारी शिक्षण संस्थाओं में आईसीटी उपकरणों की उपलब्धता व निजी शिक्षण संस्थाओं में आईसीटी उपकरणों की उपलब्धता के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपिल, के.एच. 2012, अनुसंधान विधियां, आगरा,एच.पी. भार्गव बुक हऊस।
2. पाण्डेय, डॉ कमलाप्रसाद, 2008 : शैक्षिक अनुसंधान, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन।
3. भार्गव, महेश, 2003 : आधुनिक मनोविज्ञान परिक्षण एवं मापन, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. शर्मा, ए.आर., 2000 : शिक्षानुसंधान, (नवीन सं.) मेरठ, सूर्या पब्लिशन्स।.

❖◆❖